



श्री 108 पार्थनाथ पंचकल्याणक पूजन के लाभार्थी

मातुश्री बदामीदेवी सॉकलचन्दजी चुन्नीलालजी हिराणी के दिव्यारोष से
शा. प्रकाशचन्द, अमृतलाल, विक्रमकुमार, पंकजकुमार,
रिषभकुमार, प्रणवकुमार, शिवा, हिनल, पलक
बेटा-पोता शा. सॉकलचन्दजी चुन्नीलालजी हिराणी परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : जितेन्द्र इन्टरप्राइजेस, केरई

TIME
2:00 PM
ONWARDS

VENUE
ARADHANA
BHAVAN



अंगरचना के लाभार्थी

मातुश्री जडावीदेवी मीठालालजी उम्मेदाजी वेदमूया के दिव्यारोष से
शा. कुयालाल, कांतिलाल, प्रकाशचंद, उत्तम, रजोत,
राहुल, सुरेंद्र, आकाश, चैतन, विशाल, दर्शन, हिरेश
बेटा-पोता-पड़पोता शा. मीठालालजी उम्मेदाजी वेदमूया परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : प्रिन्स इलेक्ट्रिकल्स, कोयमटूर



प्रभु भक्ति एवं रोशनी के लाभार्थी

पिताश्री सुमेरुलालजी गुणेशजी के दिव्यारोष से एवं
मातुश्री शांतिदेवी सुमेरुलालजी वेदमूया के आशीर्वाद से
शा. जयंतीलाल, सुरेशकुमार, दिनेशकुमार, विमलकुमार, नरेश, दर्शन, विपुल, मानव, मानविक
बेटा-पोता शा. सुमेरुलालजी गुणेशजी वेदमूया परिवार, रेवतड़ा
प्रतिष्ठान : श्री धनलक्ष्मी बैंगिल्स स्टोर, फिरोजाबाद (हवेली)

जिन पूजा

प्रभु के विशिष्ट शक्ति केन्द्रों के पावन स्पर्श
द्वारा की गई अंग पूजा जीव को प्रभु के साथ
सामिप्य-योग में ले जाती है। नैवेद्य आदि के
अर्पण से की गई अन्न-पूजा प्रभु के प्रति समर्पण-
योग का कारण बनती है। उत्तम द्रव्यों से की
गई द्रव्य पूजा यह स्तवन-गुणगान आदि द्वारा
होने वाली भाव पूजा में उत्कृष्टता प्रकट कर
प्रभु के साथ एकत्व-योग में ले जाती है। यही
एकत्व-योग आत्मा को अंततः सर्व जीवों के
लिए परम अभयदान रूप मोक्ष तक ले जाता है।